लाभ

- संपूर्णा रेशमकीटों के लिए सुरक्षित है, यह एक पौधा–आधारित स्टेरॉइड है जो निर्मोक (मोल्टिंग) हार्मोन को प्रभावित करता है।
- सम्पूर्णा का उपयोग शहतूत रेशमकीट की शीघ्र और एकसमान परिपक्वता के लिए किया जा सकता है।
- संपूर्ण के प्रयोग से परिपक्व कीड़ों को चुनने में लगने वाली मेहनत और समय की बचत होती है।
- अंतिम चरण में शहतूत पत्ती की अप्रत्याशित कमी होने पर यह फसल को बचा सकता है।
- कोसों के लक्षणों को प्रभावित नहीं करते है ।

संपूर्णा की लागत का लेखांकन (100 रोमुबीच)

सामग्री	लागत
संपूर्णा की लागत	रु. 140.00
संपूर्णा स्प्रे की लागत	रु. 200.00
पत्ती लागत पर बचत	रु. 1500.00*
श्रम आगत में बचत	रु. 1500.00**
कुल बचत	Rs. 2660.00

- रु.5/–प्रति कि. ग्रा की दर से 300 कि.ग्रा के लिए
- रु.500/–की दर से 3 दिन के लिए 3श्रम दिवस

प्रस्तुति: डॉ. भुवनेश्वरी.ई

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। :

निदेशक

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूर 570 008

www.csrtimys.res.in csrtimys@gmail.com

csrtimys csrtimys csrtimysore

सम्पूर्णा

रेशमकीट बॉम्बिक्स मोरी एल में समान परिपक्वता के लिए एक फाइटोइक्डिस्टेरॉइड हार्मोन

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूर 570 008

Copies: 1000 June 2024 Design & Layout: J. Justin Kumar

रेशम उत्पादन को लाभप्रद बनाने हेतु कई प्रौद्योगिकियां विकसित की गई है । रेशम उत्पादन श्रमसाध्य और समयबद्ध काम है । रेशमकीटों की लार्वीय अवधि शहतूत पत्ती की मात्रा, गुणवत्ता और तापमान पर निर्भर होती है। कम तापमान और पत्तियां अपर्याप्त होने की स्थिति में लार्वीय अवधि एक या दो दिन तक बढ जाती है । परिणामस्वरूप कोसों की गुणवत्ता कम हो जाती है और कृषकों को आर्थिक नष्ट होता है।

रेशमकीट लार्वों की कताई एवं परिपक्वता इक्डाइज़ोन होर्मोन द्वारा नियंत्रित होता है । टाइसन हॉरमोन शारीरिक क्रियाओं एवं व्यवहारिक गतिविधियों को प्रभावित करता है। कीटपालन गतिविधियों के अंतिम चरण में इक्डाइज़ोन इष्टतम स्तर पर नहीं पहुंचने पर समान परिपक्वता प्रतिबंधित होती है।

ठंड के महीनों में यह प्रवृत्ति सामान्यत: पाई जाती है जैसाकि लार्वीय अवधि बढ जाती है और पत्तियों की कमी होती है । सामान्य रेशमकीटपालन पद्धतियों में रेशमकीट परिपक्व होने पर कृषकों को रेशमकीटों को कताई हेतु चढाना पड़ता है और आरोपण की प्रक्रिया दो या अधिक दिनों तक जारी रहता है ।

इसके लिए बहुत समय एवं श्रम लगता है और अधिक शहतूत पत्तियों की मांग होती है जिसके परिणामस्वरूप विपणन समस्याएं उत्पन्न होने के अलावा बीज उत्पादित करने वाले बीजागारों में भी कार्यकलाप लंबा हो जाता है । पत्ती की कमी की स्थिति से जूझने हेतु और कताई प्रक्रिया नियंत्रित करने तथा समक्रमिक करने हेतु कैरेअप्रसं, मैसूरु ने पौधा–आधारित कताई होर्मोन विकसित किया है । इसका उपयोग करके शहतूत रेशमकीटों में परिपक्वता प्रक्रिया त्वरित की जा सकती है और समक्रमिक कताई प्रेरित की जा सकती है । संपूर्णा का उपयोग किसी भी नस्ल, संकर नस्ल और संकर के लिए किया जा सकता है

100 डीएफएलएस के लिए खुराक

- 4 लीटर पतला हार्मोन घोल (दो 10 मि.ली शीशियाँ 4 लीटर पानी में घुला हुआ)

कब इस्तेमाल करें

- कताई की शुरुआत पर (जब एक बैच में 3-5% परिपक्व कीड़े दिखाई देते हैं)

उपयोग कैसे करें

- रेशमकीट पालन शय्या पर शहतूत की पत्तियों की एक परत फैलाई जाती है।
- एक हैंड स्प्रेयर का उपयोग करके पत्तियों पर 100 डीएफएल के लिए 4 लीटर पतला घोल स्प्रे करें।
- उपचारित पत्तियों की पूरी खपत के बाद एक और बार (यदि आवश्यक हो) खिलाई जा सकती है।
- देखा जा सकता है कि छिडकाव के 18-24 घंटों के भीतर सभी कीड़े परिपक्व हो जाते हैं।